हिंदी कथा-साहित्य में आदिवासी संवेदना

संपादक- डॉ. दिलीप मेहरा

ISBN : 978-81-950501-7-8

पुस्तक : **हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी संवेदना**

संपादक : डॉ. दिलीप मेहरा

प्रकाशक : **उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स**

A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर -208 021 (उ.प्र.)

Email : utkarshpublisherskanpur@gmail.com

Mob. : 8707662869, 9554837752

संस्करण : प्रथम, 2021

मूल्य : **795.00 (सात सौ पंचानवे रुपये मात्र)**

आवरण सज्जा : तबारक अली, पटकापुर, कानपुर

शब्द-सज्जा : रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : सार्थक डिजिटिल, कानपुर

Hindi Katha Sahitya Mein Adiwashi Samvedana
by : Dr. Dilip Mehra
Rs. Seven hundred Ninty Five Only.

अनुक्रम

कथा साहित्य

1. आदिवासी उपन्यासों का लेखाजोखा
हरिराम मीणा 09

2. बाहरी दखल से मरते आदिवासी
डॉ. रमेश चंद मीणा 24

3. रचाव-बचाव की कहानियाँ
प्रो. शिव प्रसाद शुक्ल 35

कहानी साहित्य

4. समकालीन आदिवासी हिन्दी कहानी साहित्य में आदिवासी जीवन का यथार्थ
डॉ. आदित्य कुमार गुप्ता 43

5. हिंदी कहानियों में निरूपित आदिवासी समाज (आदिवासी चर्चित कहानियों के संदर्भ में)
डॉ. राजेन्द्र परमार 52

6. पूर्वोत्तर की आदिवासी धड़कन
डॉ. रमेश चंद मीणा 60

7. आदिवासी स्त्री जीवन की दास्तान : रोज केरक्केट्टा की कहानियाँ
डॉ. राधामणि सी. 71

8. रमणिका गुप्ता की कहानियों में चित्रित आदिवासी नारियों का संघर्ष
डॉ. संगीता चौहान 78

9. मेहरून्निसा परवेज़ की कहानियों में आदिवासी विमर्श
डॉ. एन. टी. गामीत 85

10. हरिराम मीणा रचित कहानियों में संघर्षपूर्ण आदिवासी जीवन
डॉ. अनु पाण्डेय 91

11. आदिवासी विमर्श एवं मंगल सिंह मुंडा की कहानी 'धोखा'
नीलम वाधवानी 98

12. 'याक जाकोर का वध' आदिवासी युवक-यू बकाइरखू के उत्कट जीवन संघर्ष की कहानी : एक मिथकीय व्यंजना
डॉ. श्रवण कुमार 105

5

हिंदी कहानियों में निरूपित आदिवासी समाज

(आदिवासी चर्चित कहानियों के संदर्भ में)

डॉ. राजेन्द्र परमार

समकालीन साहित्य विमर्श केंद्रित साहित्य है। विमर्श केंद्रित साहित्य में किसी एक विशेष समाज का यथार्थ निरूपण किया जाता है। यह निरूपण भले ही स्वानुभूति और सहानुभूति के आधार पर किया गया हो। विमर्श केंद्रित साहित्य में मनुष्य जीवन के हर पहलू को सूक्ष्मता के साथ देखा परखा जाता है। उत्तर आधुनिक समय में मौजूदा विमर्शों में आदिवासी विमर्श ने अपनी खास पहचान बनाई है। कल तक जिसे अनपढ़, गँवार कहकर उपेक्षा की जाती थी, वही आदिवासी लोग जिसे 'मूल निवासी' के नाम से भी जाना जाता है, अपने अस्तित्व के लिए, अपनी पहचान को कायम करने के लिए संघर्षरत है। आज का आदिवासी विमर्श अस्तित्व और अस्मिता का विमर्श है। आदिवासियों की प्रमुख समस्या विस्थापन की समस्या है। उनको जंगल से खदेड़ा जा रहा है, जिससे उनकी सांस्कृतिक पहचान उनसे छूट रही है। परियोजनाओं के नाम पर आदिवासियों को जंगल से निकाला जा रहा है। मजदूरी के नाम पर दिकू लोग उनका शोषण भी करते हैं।

आदिवासी साहित्य की एक लंबी मौखिक परंपरा रही है। वर्तमान में जो भी आदिवासी साहित्य लिखा जा रहा है, उसका प्रेरणा स्त्रोत यही मौखिक परंपरा ही है। वैसे तो सन् 1950 के आस–पास आदिवासी साहित्यकारों ने अपनी अनुभूति को कलमबद्ध करना शुरू कर दिया था। समकालीन आदिवासी लेखन की और विमर्श की शुरुआत 1991 से मानी जा सकती है।[1] आदिवासी और गैर आदिवासी रचनाकारों ने साहित्य की प्रमुख विधा कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास में आदिवासी जीवन समाज की सफल प्रस्तुति की है। प्रस्तुत शोधपत्र में आदिवासी चर्चित कहानियाँ, संपादक– डॉ. एम. फीरोज ख़ान, पुस्तक को केंद्र में रखकर आदिवासी समाज को देखने का नम्र प्रयास है। इस संकलन में आदिवासी और गैर आदिवासी दोनों प्रकार के कथाकारों की 18 कहानियाँ संकलित हैं।

'अमली' हरिराम मीणा की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में पूर्वी राजस्थान के डांग क्षेत्र में किवदंती बन चुकी अमली इस कहानी की नायिका है। अमली घुमक्कड़ आदिवासी समुदाय की एक कलाकार थी। वह नट विद्या में पारंगत थी। वह तनी हुई रस्सी पर चलने की कला में निपुण थी। तिमनगढ़ के राजा ने अमली की परीक्षा लेनी चाही और सफल होने पर आधा राज्य देने की बात की। अमली इस चुनौती को स्वीकार करती है। जब अमली विजय के बिल्कुल करीब थी तब तिमनगढ़ की महारानी आधा राज्य देना न पड़े इसलिए इशारा करके रस्सी को कटवा देती है। अमली निचे गिर पड़ती है और मरने से पहले राजा–रानी को शाप देती है। इस प्रकार इस कहानी में एक उच्चवर्ग की स्त्री अर्थात् रानी आदिवासी नटनी अमली से बहिन का भाव न रखकर अपने वर्ग हितों को वरीयता देती है। अमली जैसी हजारों आदिवासी स्त्रियाँ है जो संभ्रांत सवर्ण स्त्रियों के वर्ग–द्वेष का शिकार होती आई हैं और हो रही है। इतिहासकारों ने अपने इतिहास में उनको स्थान की तो बात छोड़िए, याद तक नहीं किया है।

वाल्टर भेंगरा की कहानी 'विकल्प' गाँव से शहर जा बसे पढ़े–लिखे आदिवासियों के लिए वाकई में एक विकल्प प्रस्तुत करती है। इस कहानी के केंद्र में है मध्यवर्गीय आदिवासी युवक किशोर और उसका परिवार। किशोर की नौकरी शहर में लग जाने के कारण गाँव में बूढ़ी माँ अकेली रह जाती है। किशोर माँ को शहर ले भी आता है किन्तु पिंजड़ेनुमा महानगरीय फ्लैट में रहना माँ को रास नहीं आता, सो वह गाँव वापस आ जाती है। किशोर माँ को समय समय पर रुपये भेजता है किन्तु बूढ़ी माँ के मन रुपया ही सब कुछ नहीं है। उसके मन की लालसा तो यह है कि बेटा और उनका परिवार उसके साथ रहे। दूसरी तरफ किशोर और उसकी पत्नी शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी से तालमैल बैठाने की कोशिश करते हैं। गाँव का आकर्षण इन दोनों के लिए एक विकल्प के रूप में नजर आता है। किशोर और उसकी पत्नी यह भी जानते हैं कि उनका यह विकल्प आसान नहीं होने वाला क्योंकि गाँव में स्वयं को विकसित करने के अवसर कम हैं। वे दोनों यह भी समझते हैं कि गाँव के प्रति उनका भी कुछ कर्तव्य है। इस कहानी में लेखक ने यह संकेत किया है कि पढ़े लिखे आदिवासी लोग ही गाँव के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

'दहेज' केदार प्रसाद मीणा की बहु–चर्चित कहानी है। दहेज जैसी कुरीति के कारण कितनी ही आदिवासी स्त्रियों ने अपना बलिदान दे दिया है। दहेज एक ऐसी बिमारी है जो आदिवासी समाज में भी घर करती जा रही है। दहेज जैसी संक्रामक बिमारी आदिवासी समाज को खोखला कर रही है। कहानीकार ने इस कहानी में मीणा समाज में घर कर गई दहेज प्रथा का विरोध किया है। बड़े ताज्जुब की बात तो यह है कि पढ़े–लिखे आदिवासी युवा अपने पदानुसार दहेज की मांग करते हैं। एक तरफ तो वर्तमान में दहेज जैसी कुप्रथा का प्रचलन शिक्षित लोगों

में अधिक है, तो दूसरी तरफ मीणा आदिवासियों की शिक्षित पीढ़ी में मेघराज जैसे युवा लोग दहेज के कारण अपने समाज में घर करती जा रही विकृतियों को समझने लगे हैं। मेघराज जैसे युवा सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को जागरूक भी कर रहे हैं तथा दहेज जैसी कुरीति का विरोध करने में अपनी सक्रियता भी दिखा रहे हैं। आदिवासी समाज को जागरूक कर रहे आदिवासी युवाओं को उसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है। मेघराज को डरा–धमकाकर जेल में बंद कर दिया जाता है।

आदिवासी कहानीकारों में श्रीमती एलिस एक्का का महत्वपूर्ण स्थान है। सातवे दशक से उन्होंने कहानी लेखन का आरंभ कर दिया था। वंदना टेटे ने श्रीमती एलिस एक्का को भारत की पहली महिला आदिवासी कथाकार माना है।[2] 'धरती लहरायेगी...झालो नाचेगी... गायेगी' कहानी में लेखिका ने भारतीय जनता के मोहभंग की स्थिति को संकेत रूप में दिखाया है। आम जनता के साथ मोहभंग के दौर में भारत का आदिवासी राष्ट्र को किस रूप में देख रहा था, यह कहानी का मुख्य विषय है। अकाल के कारण पूरी धरती सूख गई है, चारों ओर भुखमरी फैली हुई है, ऐसे में आदिवासी लोग नाचें–गायें ऐसा भला हो सकता है क्या? यही कारण है कि झालो जेरकु के कहने के बावजूद नाचने गाने से इनकार कर देती है। वैसे भी आदिवासी समाज के लोगों में धैर्य और सहनशीलता सहज ही देखी जा सकती है। "जीओ और जीने दो' की तर्ज पर आदिवासी लोग सबके लिए मंगल कामना करते हैं। ननकु कहता है कि– "मैं जानता हूँ झालो कब गायेगी और नाचेगी। जिस दिन भूख मिट जाएगी– जिस दिन हमारी धरती धान के पके बालों से लहरायेगी– उस दिन झालो नाचेंगी और गायेंगी– उस दिन उसकी स्वर लहरी हवा में लहरायेगी– वह पहाड़ों से टकराकर आकाश में गूंज उठेगा– सबके हृदय झंकृत हो उठेंगे, सब नाच उठेंगे तब– धरती थिरक उठेगी। और इसके लिए हम जी जान एक कर देंगे कि धरती लहरा उठे। खेत मुस्करा उठे, अनाज बलबला उठे। हम मेहनत करेंगे– सरकार हमें मदद दे रही है। क्यों झालो, अब तो खुश हो न यह सुनकर क्यों झालो, तब नाचेगी न, गायेगी न? झालो ने मुस्कुराते हुए जेरकु और ननकू को देखा और सिर हिला दिया।"[3] दुःख और अकाल के दिनों में आमोद प्रमोद की बात करना आदिवासी बाला झालो के लिए कष्टदायक थी।

आदिवासी समाज सदियों से दिकू लोगों के शोषण का शिकार होता आया है। 'जूठे प्लेट' रूपलाल बेदिया की चर्चित कहानी है। मांझी आदिवासी लोगों का शोषण ब्राह्मण परिवार किस प्रकार करता है तथा सवर्ण लोग कैसे उनका अपमान करते हैं उसका यथार्थ वर्णन इस कहानी में हुआ है। रंगलाल नागेशर शर्मा के लड़के बटुकलाल शर्मा के विवाह समारोह में अपने माँ–बाप के साथ अन्य गाँव वालों को बंधुआ मजदूरों की तरह अपमानित होते देखकर उसका खून खौल

उठता है। रंगलाल पढ़ा लिखा है, वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है। वह अपने समाज के लोगों का अपमान होते हुए नहीं देख सकता, इसलिए वह अपने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहता है– "हम लोगों ने बहुत अत्याचार सह लिए, अब और नहीं सहेंगे। बहुत शोषित हो लिए, अब नहीं होंगे। बहुत मार खा ली अब नहीं खायेंगे। मुफ्त में बहुत सेवा कर ली बड़े लोगों की अब नहीं करेंगे। आप लोग मेरी बात समझ रहे हैं न?"[4] इस प्रकार रंगलाल के समझाने पर मांझी लोग बिना मजदूरी के बाबाजी का कोई भी काम आगे से न करने की शपथ लेते हैं। रंगलाल जानता है कि छोटे लोग बड़े लोगों के यहाँ बिना मजदूरी के काम करने से मना कर देंगे तो वे लोग खुद तो करेंगे नहीं क्योंकि काम उनसे हो ही नहीं पायेगा। लेखक ने यहाँ दिकू लोगों की अकर्मण्यता की ओर इशारा किया है।

'परती जमीन' कहानी के लेखक हैं पीटर पाल एक्का। आदिवासियों की जमीन पर विकास के नाम पर बांध बनाये जाते हैं किन्तु आदिवासियों को उनकी जमीन सिंचने के लिए पानी नहीं दिया जाता। वह जमीन परती ही रह जाती है। जिस बांध को बनाने में आदिवासी लोग परिश्रम करते हैं, उसी बांध का पानी उनको खेती करने के लिए नहीं दिया जाता है। बांध जैसी बड़ी–बड़ी परियोजनाओं पर काम करनेवाली आदिवासी युवतियों का यौन शोषण दिकू लोग करते हैं। कहानी में बाबू भजनसिंह का चरित्र ऐसा ही है। दिकू लोगों की सोच आदिवासियों को लेकर कितनी गंदी होती है, यह बात बाबू भजनसिंह के संदर्भ में देखी जा सकती है– "गऊ की तरह सीधे सादे लोग हैं। मेहनत मजदूरी के लिए ही लगता है भगवान ने उन्हें बनाया है। धूप–बरसात का उनके साँवले–सख्त बदन पर कोई असर नहीं। लड़कियाँ तो और भी भोली भोली हैं, जो चाहो कर लो।"[5] बाबू भजनसिंह की यह कुटिल मुस्कान और आदिवासी युवतियों के प्रति उनकी सामंती मानसिकता हमें भीतर से झकझोर कर रख देती है। एतवारी और चौतू जैसे विद्रोही आदिवासियों को बाबू लोग अपने पद–पैसे के जोर से कुचल देते हैं। आदिवासी लोगों की पीड़ा का मुखर रूप इस कहानी में उभरकर सामने आया है। कहानीकार ने आदिवासी लोगों की पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है– "हमारा तन–मन, हमारी जमीन, हमारी जीविका, हमारी इज्जत, हमारा सबकुछ लूटकर जो बाँध तैयार होगा, जो नहरें खोदी जायेंगी, उससे किनके खेत सिचेंगे, जो बिजली तैयार होगी, उससे किनके घर–आँगन रोशन होंगे?"[6] आदिवासी दिकू लोगों से पूछना चाहते हैं कि विकास की जितनी भी परियोजनाएँ आदिवासी क्षेत्रों में लागू हैं उनसे आदिवासियों को कोई लाभ होगा या नहीं। आज भी ऐसे हजारों आदिवासी लोग हैं जिनको सरकारी सुविधाओं से वंचित रखा गया है।

'पगहा जोरी–जोरी रे घाटो' रोज केरकट्टा की चर्चित कहानी है। इस कहानी में आदिवासी लड़की दया द्वारा संघर्ष करके शिक्षा प्राप्त करने की बात है। भारतीय समाज में बेटा और बेटी में आज भी भेद किया जाता है। दया के

माता–पिता दया को लड़की होने के कारण पढ़ाना नहीं चाहते हैं। दया को अपने भाइयों को पढ़ते हुए देखकर उसे भी पढ़ने की इच्छा होती है। दया अपनी माँ से कहती है कि– "मेरा भी नाम स्कूल में लिखा दो। अपने बेटों को तो पढ़ाती हो। मुझसे सारा काम कराती हो।"[7] जिन बेटों को माता–पिता पढ़ाते हैं वे बुढ़ापे में एक गिलास पानी तक नहीं देते हैं। दया कहती है– "बेटों को पढ़ा रही है, एक गिलास पानी तक नहीं पिलाते हैं, उनको पढ़ा रही है।"[8] अन्य समाज की की तरह आदिवासी समाज की भी यही सच्चाई है। स्कूल के पास वाले मैदान में मवेशियों को चराते हुए दया मास्टरजी न देख सके वैसे खिड़की के पास खड़ी होकर अक्षरज्ञान हासिल कर लेती है। वह मैदान की मिट्टी में क, ख, ग और वाक्य लिखना भी सीख जाती है, साथ ही सौ तक की गिनती भी सीख लेती है। पढ़ाई के प्रति दया की लगन और रुचि देखकर बोखा मास्टर दया के माता–पिता को समझाते हैं। इतना ही नहीं, स्कूल की ओर से दया के लिए किताब–कापी और पेंसिल की व्यवस्था भी करते हैं, ताकि दया भी अन्य बच्चों की तरह स्कूल में दाखिला लेकर पढ़ सके। कहानीकार यह बताना चाहते हैं कि शिक्षा प्राप्त करके ही आदिवासी समाज अपने अधिकारों की रक्षा कर सकेगा।

आदिवासी समाज के लोगों को जंगल में से सरकार और नेता लोग किस प्रकार विस्थापित करते हैं, उसका यथार्थ वर्णन भगवान गव्हाडे ने अपनी कहानी 'गोल्डन सिटी' में किया है। यह कहानी कल्पना की कोरी उड़ान न होकर आदिवासी जीवन की कड़वी वास्तविकता को प्रस्तुत करती है। सोनवाड़ी गाँव के लोगों को अपने गाँव और जंगल से बहुत प्यार है। वे जल, जमीन, जंगल में बाहरी लोगों का हस्तक्षेप नहीं चाहते हैं। जंगल में दूरबीन के साथ शहरी लोगों को गाड़ी के साथ देखते हैं तो गाँव के लोग चिंतित हो उठते हैं। सरकार और नेता लोगों की मिलीभगत के कारण आदिवासी लोगों को उनकी जगह से खदेड़ा जाता है। गाँव के लोग विरोध करते हैं तो उनको एक साल के लिए जेल में बंद कर दिया जाता है। जोर जबरदस्ती से गाँव खाली कराया जाता है और वहाँ गोल्डन सिटी बनायी जाती है। आदिवासी लोगों को खेती और वनोपज की जगह अब उन्हें बेगारी करनी पड़ती है। इस प्रकार देखते ही देखते सोनवाड़ी गाँव का सुखी संपन्न जीवन एकाएक रेगिस्तान बन जाता है।

शिशिर टुडू की कहानी 'दिल्ली रिटर्न' में आदिवासी युवती के एकाकी जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया गया है। रोजी–रोटी के लिए आदिवासी युवतियों को शहर की ओर प्रस्थान करना पड़ता है। शहर में उनको काम तो मिल जाता है, किन्तु दिकू घरों में काम करते समय आने वाले खतरों से परिचित नहीं होती। आये दिन दिकू घरों में आदिवासी युवतियों के साथ छेड़छाड़ और दुष्कर्म की घटनाएँ होती रहती हैं। सनीचरी के साथ मकान मालिक का साला जोर–जबरदस्ती करता है, और वह दिल्ली से रिटर्न गाँव आ जाती है। पहले

पहल तो लोग उसको दिल्ली रिटर्न कहते तो उसको गर्व महसूस होता था किन्तु वहुत जल्दी दिल्ली रिटर्न का अर्थ समझ जाती है। चालीस के पार पहुँची सनीचरी के लिए 'दिल्ली रिटर्न' यानी आपकी शादी होना असंभव नहीं तो मुश्किल जरूर है। इस प्रकार यह कहानी आदिवासी युवती सनीचरी के जीवन के स्याह पक्ष को सामने लाती है। दिल्ली में घरेलू नौकरानी का काम करने के कारण उसके अपने आदिवासी समाज में कलंकित होकर एकाकी जीवन विताने को अभिशप्त है।

'कानूनी और गैर कानूनी' कहानी में आदिवासी जीवन की त्रासदी अपनी पूरी संवेदनशीलता के साथ साकार हो उठी है। आदिवासी इलाकों की जमीन खनिज संसाधनों से समृद्ध होती है और यही वात आदिवासियों के लिए आफत लेकर आती है। सोना पाहन की अपने खेत में कुआँ खुदवाने की इच्छा है। कुआँ खोदते वक्त सोना पहान की जमीन में से कोयले की खान मिलती है। यही कोयले की खान सोना पहान के लिए एक नई आफत लेकर आती है। सोना पाहन अपनी जमीन से निकले कोयले पर अपने अधिकार की वात करता है लेकिन कुछ दिनों के वाद जमींदार का वुलावा आ जाता है। सोना पहान को कहा जाता है कि ये जमीन उनके खानदान को मुफ्त में मिली थी इसलिए उसे कोई रकम नहीं मिल सकती। जमींदार ने थोड़े दिनों तक सब्र करने को कहा था। किन्तु सोना पहान को कहाँ पता था कि जमीन पर उसका अधिकार हो सकता है, जमीन में से निकली खान पर नहीं। कहानीकार ने विरसा के मुँह से जो कहलवाया है, वह आज के दौर की वास्तविकता है– "थोड़े दिनों का सब्र करने का मतलव है जिंदगी भर सब्र करना। सलामी के रुपये दाखिल करो, तो अभी चाहे जितनी जमीन लिखवा लो। साफ मतलव है कि नहीं देंगे। मुफ्त में जमीन लूट लेंगे, खान से कोयले निकाल लेंगे और तुम्हें एक छदाम भी नहीं देंगे।"[9] सरकार की नीतियों के कारण भोले भाले किसान अपने ही खेत में मजदूर वनकर रह जाते हैं। इस कहानी का शीर्षक भी वहुत सटीक है। कानूनी दृष्टि से विचार किया जाए तो जमीन सोना पाहन की थी तो कोयले की खान पर अधिकार भी उसका ही होना चाहिए था, पर वैसा होता नहीं है।

'वोलने वाले जानवर' शानी की एक प्रतीकात्मक कहानी है। इस कहानी में आदिवासियों की तुलना जानवर के साथ की गई है। जानवर तो इंसान के प्रेम के हकदार हो सकते हैं किन्तु आदिवासी मनुष्य नहीं। वड़े ताज्जुव की वात है कि मनुष्य जानवरों से प्रेम कर सकता है किन्तु मनुष्यों से नहीं। उत्तर आधुनिक दौर में मनुष्य मनुष्य के वीच की खाई वढ़ती जा रही है, एक–दूसरे के प्रति भाव–प्रेम कम होता जा रहा है। ऐसा क्यों हो रहा है इस पर विचार किया जाना चाहिए। इस कहानी में एक नृतत्वशास्त्री मिस्टर जोन्स अपने अध्ययन के सिलसिले में कथाकथक के साथ आदिवासी गाँव में जाते हैं। मिस्टर

जोन्स की पत्नी भी उनके साथ हैं क्योंकि उनको प्राकृतिक परिवेश अधिक पसंद है। कहानी का मूल केंद्रबिंदु यह है कि अपने आपको सभ्य मानने वाले गैर आदिवासी लोग कठोर परिश्रम करने वाले, कुसमय जर्जर होकर बुढ़ाते आदिवासियों की सच्चाई नहीं देख पाते। कहानी में सभ्य समाज का दोगला चरित्र और अमानवीय व्यवहार का पर्दाफाश किया गया है। सभ्य कहा जाने वाला समाज दिनोदिन संवेदनाहीन होता जा रहा है यह बड़े दुःख की बात है।

योगेन्द्रनाथ सिंहा की 'दोमुंडा पहाड़' कहानी प्रकृति के साथ आदिवासियों के रिश्तों पर प्रकाश ड़ालती है। आदिवासी समाज प्रकृति की पूजा करता है। उनके लिए प्रकृति ही सब कुछ है। प्रकृति आदिवासियों के लिए निर्जीव जड़वस्तु न होकर सजीव चौतन्यशील होती है। इस कहानी में आदिवासी युवक–युवती माका और कुंची के प्रेम की निर्मलता और गहनता का वर्णन किया गया है। अनुशासन और मर्यादा उल्लंघन के कारण माका और कुंची का मिलन नहीं हो पाता है। अपराधबोध से ग्रस्त माका को बचाने के लिए कुंची सबकुछ कर गुजरती है। माका के पहले ही कुंची के प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। कहानी का अंत हमें अवसाद में डूबो देता है।

'चांदनी रातें' विनोद कुमार की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में माँ–बेटी के मधुर और आत्मीय रिश्ते पर प्रकाश डाला गया है। बेटी विवाह करके ससुराल आ जाती है किन्तु मायके की चिंता के कारण सहज नहीं हो पाती है। उसे अपने माँ की चिंता सताती रहती है। जब भोगल अपनी पत्नी की उदासीनता का असल कारण जानता है तो वह अपनी पत्नी को अपनी माँ से मिलाने के लिए उसके मायके ले जाता है। आदिवासी समाज के पारिवारिक रिश्तों में अभी कड़वाहट नहीं आ पाई है।

आदिवासी समाज के लोग दिकू लोगों पर विश्वास करके जमीन गिरवी रखकर रुपये उधार लेते हैं जबकि दिकू लोग इन आदिवासियों की जमीन को हड़प लेना चाहतें हैं। राकेश कुमार की कहानी 'बलि' का विषय भी यही है। बलुआ बिरहोर दिकु बैरिस्टर भूमिहार के हाथों छल–कपट से जमीन छीन जाने से आक्रोशित था। बलुआ अपनी जमीन मुक्त कराने के लिए बिरहारों की देवी बैमत के थान पर बैरिस्टर की मुंडी काट उसे पूज देता है। कानून की नजर में बलुआ अपराधी था किन्तु बलुआ अपने आपको अपराधी नहीं मानता है। बलुआ अपने समाज के कानून में विश्वास करता है। आदिवासी समाज एक ऐसा समाज है, जहाँ कोई गलत काम करता है तो उसे दंड़ देने का अधिकार भी आदिवासी समाज को ही है।

'कानीवाट' मेहरून्निसा परवेज की बहुचर्चित कहानी है। आदिवासी समाज मातृसत्तात्मक समाज रहा है। आदिवासी समाज का मूल ढाँचा स्त्री की स्वाधीनता में विश्वास करने वाला रहा है। इस कहानी में आदिवासी समाज में स्त्री जीवन

के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर लेखिका ने विचार किया है। लेखिका ने आदिवासी नारी को मिलने वाली स्वतंत्रता को पूरी कहानी में रेखांकित किया है।

डॉ.मायाप्रसाद की कहानी 'दिशाहारा' में एक आदिवासी युवती अपनी आँखों से नक्सली हिंसा और पुलिस हिंसा का दोहरा मार सहते आदिवासियों की कथा कहती है। यह कहानी उस नक्सली आदिवासी युवती की विडंबना को प्रस्तुत करती है जो नक्सली समूह में शामिल तो हो जाती है, किन्तु उसमें से बाहर नहीं निकल पाती है। आदिवासी युवती पुलिस के डर के कारण न अपने गाँव–घर जा पाती है और न ही आत्मसमर्पण कर पाती है। ऐसी युवतियाँ गुमनाम जिंदगी बिताने के लिए विवश होती हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हिंदी आदिवासी कहानियों में आदिवासी जीवन का यथार्थ निरूपण हुआ है। आदिवासी विमर्श का मुख्य स्वर सामाजिक–सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा करना है। आदिवासी विमर्श के केंद्र में जल, जंगल और जमीन हैं। इन कहानियों में आदिवासी समाज जीवन जीवंत हो उठा है। हिंदी कहानी में आदिवासी और गैर आदिवासी कहानीकारों ने आदिवासी समाज की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है। समकालीन विमर्शों में आदिवासी विमर्श साहित्य में चर्चा का केंद्र रहा है और यही इस विमर्श की सफलता भी है।

संदर्भ

1. आदिवासी विमर्श, सं.गंगा सहाय मीणा, पृ.9
2. आदिवासी चर्चित कहानियाँ, सं. डॉ.एम.फीरोज ख़ान, पृ.11
3. वही, पृ.61
4. वही, पृ.66
5. वही, पृ.69
6. वही, पृ.71
7. वही, पृ.74
8. वही, पृ.74
9. वही, पृ.105

हिंदी विभाग, भाषा–साहित्य भवन,
गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
मो. 9723527487
Email : rrparmar@gujaratuniversity.ac.in